मर्दानी माँ

मर्दानी माँ

● कमलेश गोयत

समदर्शी प्रकाशन
नव-सृजन के नवीन पृष्ठ...
दुकान नम्बर- पी-726, नजदीक फैंसी चौक, नेहरू रोड, भिवानी, हरियाणा-127021

इस पुस्तक का कोई भी अंश, कहीं पर भी, बिना लेखक
की अनुमति के उद्धृत नहीं किया जाना चाहिए।

ISBN : **978-93-88049-25-2**

सर्वाधिकार © : कमलेश गोयत
W/O Anil Kumar,
Gurudwara Colony,
Rohtak road, Street no. 4,
Jind (Haryana) _126102

मूल्य : ₹200/-

प्रथम संस्करण : दिसम्बर, 2018

प्रकाशक़ : समदर्शी प्रकाशन,
दुकान नम्बर- पी-726,
नजदीक फैंसी चौक, नेहरू रोड़,
भिवानी, हरियाणा-127021
मोबाइल नं: 9599323508
Website: www.samdarshiprakashan.com
Email: samdarshi.prakashan@gmail.com

आवरण एवं पुस्तक सज्जा : 'समदर्शी'

मुद्रक :

Mardaani maa written By- Kamlesh Goyat

₹200/-

समर्पण

मैं अपने मर्दानी माँ उपन्यास को अपने स्व.दादा जी श्री उजाला राम को समर्पित करती हूँ। वे आजाद हिंद फौज के सच्चे सिपाही थे और सिंगापुर में उनकी शहादत हुई थी। दादा जी श्री उजाला राम सिवाच अपनी बुद्धिमानी एवं नेकनीयत के लिए जाने जाते थे। हालांकि वे मेरे जन्म से कई साल पहले देश के लिए क़ुर्बान हो गए थे। लेकिन बड़ो से सुनी बातों के माध्यम से मैं उन्हें जानती हूँ। उनका नाम आज यह देश भुला चुका है, लेकिन हमारे लिए वे सदा प्रेरणा स्रोत रहेंगे।

-कमलेश गोयत

मर्दानी माँ के मुख्य पात्र

ममता- उपन्यास की नायिका
जीवन सिंह- ममता का पहला पति
सागर- ममता का दूसरा पति और उपन्यास का ख़लनायक
हिम्मांक- ममता का सबसे छोटा देवर जो ट्राईपानोफोबिया से ग्रसित है।
अप्सरा- ममता की ननद व जगत सिंह की छोटी पुत्रवधु एवं सागर-हिम्मांक की बहन
सुलेखा- जगत सिंह की छोटी पुत्रवधु
जगत सिंह- सुलेखा-अप्सरा का ससुर व एक समाज-सुधारक
दौलत राम- सागर, हिम्मांक, अप्सरा का पिता
जुबैद- एक सच्चा मुस्लिम सैन्य अफसर जिसका बेटा आतंक की राह पकड़ लेता है।
दानीस- पाकिस्तान का आतंकी सरगना जो ममता के इश्क़ में पागल होकर जुबैद की हर बात को सच मान लेता है।
नीलकंठ व शीलवती- सुलेखा के माता- पिता
अतुल-विपुल- जगत सिंह के पुत्र
बहादुर- ममता का तीसरा पति
रमूल- बहादुर का सच्चा साथी
राजू व पाली- सागर के साथी

भूमिका

मर्दानी माँ एक ऐसी माँ की कहानी है जो एक बहादुर सैनिक की पत्नी है। पति के शहीद हो जाने पर उसे उसके देवर के साथ पत्नी के रूप में रहने को कह दिया जाता है और अपने परिजनों के कहने पर वह उसी घर में अपने देवर के नाम का सिंदूर अपनी माँग में भरकर रहने लगती है। उसे धोखे से केवल इसलिए घर से बाहर निकाल दिया जाता है क्योंकि वह माँ नहीं बन सकी। फिर उसके परिजन उसकी शादी ऐसे व्यक्ति से कर देते हैं जिसका एक बच्चा है और पत्नी मर चुकी है। उसे यहाँ से सिर्फ़ इसलिए निकाल दिया जाता है क्योंकि वह एक बच्चे की माँ बन गई और उस पर बार-बार सौतेले बर्ताव का आरोप लगाया जाता है। अबकी बार वह अपने परिजनों को बिना बताए अपने बेटे के साथ अज्ञात स्थान पर चली जाती है। वह अति कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए अंत में खुद को सच्ची माँ साबित करने में सफल हो जाती है। अपने देश के लिए वह पाकिस्तान भी जाती है और खुद को एक शहीद की विधवा साबित करते हुए अन्य तथाकथित पतियों को उनकी औक़ात दिखा देती है।

मर्दानी माँ में अति रोचक ढंग से घटनाओं को परस्पर जोड़ा गया है। यह उपन्यास पाठकों को खूब पसंद आएगा, मुझे यह उम्मीद ही नहीं भरोसा भी है।

-कमलेश गोयत

1.

खाने की मेज पर दयाल सिंह ने अपने बेटे जगत सिंह से कहा, '' बहू कह रही थी कि तू इस धंधे को बदल रहा है जगत?''

जगत सिंह ने मटर-पनीर की सब्जी में से पनीर को चुनते हुए कहा, ''मैं अपने धंधे की दिशा बदलने की सोच रहा हूँ पिताजी।''

''दिशा बदलने का क्या मतलब हुआ बेटा?''

''आज हम करोड़ों में खेल रहे हैं पिताजी। बिना कोई मेहनत किए ठाठ-बाट की ज़िन्दगी जी रहे हैं। हमें अब गरीबों के लिए भी कुछ करना चाहिए।''

''तू पगला तो नहीं गया है? गरीबों से हमें क्या लेना-देना? हमने तो उनको गरीब नहीं बनाया?''

''पर गरीबों ने हमको अमीर तो बनाया है पिताजी।''

''कैसी बे सिर पैर की बाते करने लगा है तू बेटा। हम बड़े व्यापारियों को ब्याज पर पूंजी देते हैं और वे अधिक फ़ायदा कमाकर ऊँची ब्याज-दर चुका देते हैं। गरीब तो हमारा ग्राहक़ तक नहीं है, वह अपने धंधे का हिस्सा ही नहीं है।''

''मैं आपसे सहमत हूँ लेकिन मैं यह भी मानता हूँ कि बड़े कारोबारी को फायदा गरीब की जेब से ही पहुँचता है। ऐसे में गरीब के खून-पसीने की गाढ़ी कमाई अपनी तिज़ोरी तक भी पहुँचती रहती है।''

अपने बेटे की बात सुनकर दयाल जी सोच में पड़ गया। कुछ देर बाद वह बोला, ''तू एक अकेला कितने गरीबों की ग़रीबी मिटा सकता है? ये मत भूल कि ये काम हमारे बूते से बाहर की बात है।''

''पिताजी, अगर मैं एक या दो ज़िन्दगी भी बचा सका तो यह मेरे लिए आत्मिक शांति की बात होगी। महाजनों के चक्रव्यूह में फंसकर हर रोज मर रहे हैं किसान। मैंने अपनी आँखों से देखी है ग़रीबों की दयनीय हालत। नीलकंठ का फूफा जी आत्महत्या

करने वालों में से नहीं था, महाजन के शोषण ने मारा है उसे।''

अपने बेटे की यह बात सुनकर दयालसिंह ने अपनी पुत्रवधु को कहा,'' बहू! अंदर से मेरा बही-खाता लाओ जरा। मैं इस नासमझ को कुछ दिखाना चाहता हूँ।''

जगत सिंह की पत्नी अंदर से बही-खाता उठा लाई। दयालसिंह ने उसे खोलकर अपने बेटे के सामने रखकर कहा, ''देख! ध्यान से देख! ये उन्ही गरीबों के अँगूठे है। मैंने भी एक बार तुम्हारी तरह इनके बारे में सोचा था और कुछ को कम ब्याज पे पैसा दे दिया था, पर हुआ क्या? एक ने भी सूद नहीं लौटाया। बार-बार टोकने पर मूल चुकाया। ये लोग नीयत से ही गरीब हैं और इनकी आदतन गरीबी को तू नहीं मिटा पाएगा बेटा।''

''मैं कोशिश करना चाहूँगा पिताजी।''

अपने पति की यह जिद देखकर उसकी पत्नी ने नम्र शब्दों में कहा, ''आप पिताजी की बात भी नहीं मानेंगे? हो क्या गया है जी आपको।''

अपनी पत्नी की यह बात सुनकर जगत सिंह ने गंभीर मुद्रा बनाते हुए कहा, ''शकुंतला, मुझे उन बच्चों में अतुल-विपुल का चेहरा नज़र आ रहा था। उन औरतों में मुझे तुम नज़र आ रही थी। उन ज़िंदा लाशों को देखने के बाद तुम भी मेरी बात का मतलब और महत्व समझ जाओगी। मैं अपने परिवार को पकवान खिला रहा हूँ और उधर इंसान मर रहे हैं...।''

उसकी बात को बीच में ही काटते हुए दयाल सिंह बोल पड़ा, ''ठीक है बेटा जगत। तेरी यही मर्जी है तो हम तुझे रोकेंगे नहीं। लेकिन एक बात का ध्यान रखना- तेरे भी बीवी बच्चे हैं। ऐसा ना हो कि दूसरों का भला करते-करते तू खूद कंगला हो जाए।''

जगत सिंह के पिताजी बड़े-बड़े व्यापारियों को ऊँची ब्याज-दर पर पूंजी दिया करते थे। जगत सिंह ने भी यही काम पकड़ लिया। एक दिन वह अपने बचपन के साथी नीलकंठ के साथ उसके फूफा जी की मौत पर शोक़ प्रकट करने गया। बातों-बातों में ग्रामीणों से उसे पता चला कि सेठ दौलत राम नामक एक महाजन के चक्रवृद्धि ब्याज से गरीब किसान भूखे मर रहे हैं और कई तो आत्महत्या भी कर चुके हैं। इससे जगत सिंह को खुद पर ही गुस्सा आया, वह सोचने लगा-लानत है मेरी अमीरी पर। यदि मैं इन लोगों की मदद नहीं कर सकता तो मुझे इनके दुःख से दुःखी होने का नाटक करने की ज़रूरत भी नहीं है। मैं सक्षम हूँ और ऐसे में मुझे पीछे नहीं हटना चाहिए। मुझे कुछ तो करना ही होगा।''

जगत सिंह और नीलकंठ इसी मुद्दे को लेकर थाने में पहुँचे और दौलत राम के शोषण से उन्हें परिचित कराया। उनकी बातें सुनकर थानेदार ने ताना मारते हुए कहा,'' ये आपकी ग़लती नहीं है। आजकल फैशन सा चल पड़ा है गरीबों का मसीहा बनने का। जिसे देखो, वही गरीब की आवाज़ को बुलंद करने का ढकोसल करता दिखता है। आप जैसे लोग कुछ दिन हो-हल्ला मचाते हैं और फिर राजनीति में आ जाते हैं।

अगर आप गरीबों के इतने ही हितैषी होते तो उनके लिए कुछ करते और अड़चन आने पर हमारे पास आते। हम इस तरह किसी के खिलाफ़ एक्शन नहीं ले सकते।''

उस थानेदार की बातें जगत सिंह के दिल में जाकर लगी। उसने खड़े होते हुए कहा, '' ठीक है थानेदार साहब! मैं आपको कुछ करके भी दिखाऊँगा।''

जगत सिंह ने दौलत राम के गाँव में 'उम्मीद गरीब की' नाम की संस्था खोल ली।

दौलत राम ने इस संस्था को बंद करवाने के लिए बहुत प्रयास किए लेकिन जगत सिंह की प्रगतिशील सोच के सामने उसकी एक न चली।

'उम्मीद ग़रीब की' संस्था ने थोड़े समय में ही खूब प्रगति कर ली। शीघ्र ही कई

समाजसेवी इस संस्था को योगदान देने लगे और उनकी आर्थिक मदद एवं ग़रीबों की दुआओं से चार-पाँच गाँवों के लोग इससे जुड़ गए। चूंकि ब्याज-दर बैंको की ब्याज दर जितनी थी, इसलिए किसान समय पर कर्ज़ चुका देते, वे इस संस्था को किसी भी हालत में फेल नहीं होने देना चाहते थे। वे इस संस्था के साथ दिल से जुड़े थे। उन्हें दौलत राम के चंगुल से छुड़ाने वाला जगत सिंह मसीहा नज़र आ रहा था। इस मुहिम में जगत सिंह का सच्चा साथी था- नीलकंठ। नीलकंठ ही लेन देन का समस्त कार्य संभाल रहा था।

कुछ ही समय बाद दौलत राम का धंधा चौपट हो गया। किसानों की फसल का सस्ते में सौदा करने वाला दौलत राम अब खाली बैठा मक्खियाँ मार रहा था। इसी बीच उसकी पत्नी बीमार हो गयी। चिकित्सकों की महंगी फीस और दवाईयों ने उसकी काली कमाई को चूस लिया, बावजूद इसके उसकी पत्नी की बीमारी का पता ही नहीं चल पाया।

एक दिन वह अपने चारों बच्चों को छोड़कर इस दुनिया से चल बसी। अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद दौलत राम बुरी तरह टूट गया। गाँव वाले भी उसके दुःख में उसके साथ नहीं थे। लोग उसके मुँह पर कह देते थे -तेरी वजह से कितनी चिता जली हैं, अब अपनी घरवाली के दुःख से तुझे हमारे दुःख का अहसास तो हो ही गया होगा।

दौलत राम का पार्टनर सुखदेव भी अवसादग्रस्त रहने लगा था। दौलत राम ने सुखदेव के साथ मिलकर खूब पैसा कमाया था। वह दौलत राम का दायां हाथ समझा जाता था। लोगों को डरा-धमकाकर कर्ज़ वसूली करना उसी के जिम्मे था। यह कहा जाता था कि दौलत राम के दिमाग़ और सुखदेव की ताकत के कारण ही उनका धंधा फल-फूल रहा था।

अपनी पत्नी और इकलौते बेटे को छोड़कर एक दिन सुखदेव भी चल बसा। उसकी मौत पर कई ग्रामीण यह कहने लगे कि अब दौलत राम का नम्बर है। दौलत राम भी डरा हुआ था। उसे अपने बच्चों का भविष्य अंधकारमय नज़र आने लगा था। उसे किसी से भी मदद की उम्मीद नहीं थी। क्योंकि उसने कभी भी किसी की मदद नहीं की थी। दौलत राम ने लाचारी, दुःख व घोर निराशा की घड़ी में उसने जगत सिंह के पास जाने का निश्चय किया।

दौलत राम को अपने द्वार आये देख जगत सिंह हैरान रह गया। उसने अपने घर आये व्यक्ति को आदर देते हुए बैठने को कुर्सी दी और अपनी पत्नी से चाय के लिए बोल दिया।

जगत सिंह ने चाय की चुस्कियों के बीच दौलत राम से आने की वजह पूछी। दौलत राम ने भावुक अंदाज़ में कहना शुरू किया, ''काहे का दौलत राम हूँ मै! मैं तो दौलत हीन हो चुका हूँ। मुझ अभागे को तो कोई देखना भी नहीं चाहता, मुँह फेर लेते हैं लोग मुझे देखते ही। मैं कहाँ जाऊँ...?'' कहते-कहते वह रो पड़ा।

जगत सिंह ने विनम्र अंदाज़ में कहा, ''देखो दौलत भाई, तुमने अपनी चलती में किसी को नहीं बख़्शा। आज तू रो रहा है, याद कर तेरे सामने भी कोई रोया होगा इसी तरह। तेरे सामने रोने वाले अभागे थे पर तू तो शोषक है। मैंने तुम्हारे चर्चे सुनकर ही अपना धंधा बदला था। ख़ैर छोड़ ये सब, ये बता कि मुझसे क्या चाहते हो तुम?''

''मैंने सुना है कि आप ग़रीब का दर्द बाँटते है साहब! आज मुझसे ग़रीब शायद ही कोई होगा मेरे गाँव में। मेरे बच्चे भूखे मर रहे हैं, मुझे कोई काम ही दिलवा दीजिए साहब। मैं खेतों में दिहाड़ी करने को भी तैयार हूँ।''

दौलत राम की यह बात सुनते ही जगत सिंह की आँखे भर आई। उसने खुद से ही कहा, ''बिन माँ के उन बालकों का भविष्य ख़राब नहीं होने दूँगा मैं।''

प्रत्यक्ष रूप में वह बोला, ''दौलत भाई! तेरे आँसू इस बात की गवाही दे रहे हैं कि तुझे अपने गुनाहों का अहसास हो गया है। तुझे दिहाड़ी मैं दिलवा दूँगा। तेरे चारों बालकों का खर्च भी मैं उठा लूँगा।''

इतना सुनते ही दौलत राम जगत सिंह के चरणों में गिर पड़ा।

जगत सिंह का बड़ा बेटा विपुल और दौलत राम का दूसरे नम्बर का बेटा सागर व सुखदेव का इक़लौता बेटा पाली सहपाठी थे। दौलत राम का बड़ा बेटा जीवन सिंह छठी कक्षा का छात्र था और सागर आदि से एक कक्षा आगे था। दौलत राम की बेटी अप्सरा, नीलकंठ की बेटी सुलेखा और जगत सिंह का छोटा बेटा अतुल तीसरी कक्षा में पढ़ रहे थे और दौलत राम का सबसे छोटा बेटा हिमांक दूसरी कक्षा छात्र था।

जगत सिंह ने दौलत राम के चारों बच्चों का दाख़िला उसी विद्यालय में करवा दिया जहाँ विपुल व अतुल पढ़ रहे थे। अपने दोस्त सागर के साथ के लिए सुखदेव का बेटा पाली भी उसी विद्यालय में आ गया।

सुखदेव की विधवा अपने घर आने वाली पड़ोसिनों से अक्सर ये कह देती थी- ''मेरा मर्द उस जगत सिंह के आने से मरा, दौलत राम की घरवाली भी उसी के आने से मरी। ना वो इस गाँव में काम करता और ना ये मरते।''

इस प्रकार की बातों का प्रभाव पाली के बालपन पर भी पड़ने लगा था।

एक दिन उसने सागर से कहा, ''सागर! तुझे पता है? मेरे बापू और तेरी माँ की मौत क्यों हुई?''

सागर ने अपने बस्ते को संभालकर रखते हुए कहा, ''मेरी माँ बीमार थी। तेरा बापू

भी बीमार ही होगा।''

''अरे नहीं! वे दोनों जगत सिंह ने मारे हैं।''

''यानी विपुल के पिताजी ने?''

''हाँ।''

''तुमसे किसने कहा पाली?''

''मेरी माँ कह रही थी।''

''अच्छा! पर जगत चाचा तो अच्छे हैं। पिताजी कह रहे थे कि उन्होंने ही हमारा दाख़िला यहाँ करवाया है।''

''मेरी माँ सब कुछ जानती है सागर। एक औरत से कह रही थी कि ना जगत सिंह यहाँ धंधा जमाता और ना वे मरते, जगत चाचा अब दिखावे के लिए तुम बहन-भाइयों को पढ़ा रहे हैं। माँ कह रही थी कि जगत बहुत चालाक आदमी है।।''

''मैं आज पिताजी से ये बात ज़रूर पूछूँगा पाली।''

उसी दिन सागर ने अपने पिताजी से पाली की कही हुई बात बताई। दौलत राम ने अपने बेटे की बात सुनकर शाँत भाव से कहा, ''तू पढ़ाई करके बड़ा आदमी बन जा बेटा। ऐसी बातों की तरफ़ ध्यान मत दिया कर बेटा। ये हमारे बूते की बात नहीं है। वह बड़ा आदमी है और हमारा वक़्त बीत चुका है।''

सागर को ही अपने पिताजी की बात समझ नहीं आई लेकिन अपने पिताजी के उदास चेहरे से उसे यह लगा कि पाली की माँ सही कह रही है।

विपुल अपनी कक्षा में हमेशा प्रथम स्थान पर आता था और दूसरे स्थान पर सागर आता था। अबकी बार सागर ने प्रथम स्थान पर आने के लिए खूब मेहनत की थी लेकिन वह विपुल से आगे नहीं निकल पाया। घर पहुँचते ही वह रोने लगा। दौलत राम को जीवन सिंह व अप्सरा से पता चला कि वह दूसरे नम्बर पर आया है और इसीलिए रो रहा है। यह सुनकर दौलत राम ने सागर को प्यार से समझाते हुए कहा, ''तू तो मेरा सबसे होनहार बेटा है सागर! जीवन, अप्सरा, हिसांक कभी दूसरे नम्बर पर भी नहीं आए और तू...।''

बीच में ही सागर बोला,'' वो विपुल मुझसे ज़्यादा नम्बर क्यों ले जाता है हर साल? मैंने खूब पढ़ाई की, फिर भी मैं पीछे रह गया।''

''सागर बेटा! विपुल की माँ पढ़ी-लिखी है, वह उसे घर पर पढ़ाती है और तुम खुद पढ़ते हो।''

''मेरी माँ भी मुझे पढ़ाया करती थी। उसी के पिताजी ने मारा है मेरी माँ को। मैं उन्हें छोड़ूँगा नहीं।''

सागर की यह बात सुनकर जीवन व अप्सरा हैरान रह गए। हिसांक भी चुपचाप सागर के चेहरे की तरफ देख रहा था।

दौलत राम ने विचलित होकर कहा, ''तू मुझे भी मरवाएगा सागर। यदि ये बात

जगत के कानों में पड़ गई तो वो हम सबकों मरवा देगा।''

उसने ये बात सागर को डराने के लिए कही थी लेकिन बच्चे सहम गए। जीवन सिंह के मन में एक साथ कई प्रश्न उठ गए थे- जगत चाचा को हमारा स्कूल हर साल सम्मानित सदस्य के तौर पर बुलाता है, वे कई बच्चों की फीस भरते हैं ...।

अप्सरा भी ऐसा कुछ ही सोच रही थी लेकिन सागर को यक़ीन हो चला था कि जगत ही उसकी माँ का हत्यारा है।

सागर के बाहर जाने के बाद दौलत राम ने जीवन सिंह, अप्सरा, हिसांक को समझाते हुए कहा, '' सागर को इसके साथी पाली ने भड़का रखा है। जगत चाचा बढ़िया आदमी है। तुम इन बातों की तरफ ध्यान न देते हुए पढ-लिख कर बड़े अफसर बन जाओ, यही तुम्हारी माँ का सपना था। सागर को मैं बार-बार कहता हूँ पर सुनता ही नहीं। तुम इसे समझाया करो कि ऐसा नहीं कहना है।''

अपने पिताजी की बात सुनकर जीवन सिंह ने कहा, '' मैं तो समझ ही नहीं रहा हूँ कि सागर ऐसा क्यों कह रहा है। जगत चाचा हमारे स्कूल में भाषण देने आते रहते हैं, वे बहुत काम की बातें बताते हैं।''

अप्सरा ने भी जोड़ा,''हमारे अध्यापक भी जगत चाचा को बहुत आदर देते हैं। वे उनके आते ही कुर्सी से खड़े हो जाते हैं।''

''वे अच्छे हैं बेटा। तुम बस पढाई मे आगे रहो।'' यह कह कर दौलत राम बाहर चला गया। वह सोचने लगा,'' बच्चे पढ-लिख कर नौकरी लग गए तो मेरी भी इज्जत लौट आएगी गाँव में। आज लोग मुझसे बात तक नहीं करना चाहते, पैसा क्या गया कि भाईचारा ही ख़त्म हो गया। माना कि मैंने ज़्यादा ब्याज लिया पर ऐसा तो सभी करते हैं। ये जगत क्या कम है? सूदखोर तो ये भी है पर अट के बट जानता है। पता नहीं क्या जादू किया है इसने कि लोग वक़्त पर पैसा चुका रहे हैं। कुछ टाबरों की फीस भर देता है, मीठा बोलता है। बस यही तो खास है इस बंदे में वरना काम तो इसका भी वही है। खैर बच्चे पढ जाएँ, मेरा जीवन तो गुजर जाएगा। वैसे सुखदेव की विधवा पूरी तरह ग़लत भी नहीं कह रही। जीवन की माँ पूरी तरह धंधा ठप हो जाने की चिंता में मरी, सुखदेव भी इसी वजह से गया। ये जगत वाकई शातिर दिमाग़ बंदा है और मेरी मजबूरी है कि मैं उसे भला कह रहा हूँ वरना मेरे बच्चे पिछड़ जाएँगे।''

एक दिन पाली ने सागर से कहा,''सागर यार! सब फंडेबाजी है।''

उसकी यह बात सुनकर सागर ने कहा, ''पढ़ ले भई और मुझे भी पढ़ने दे। फालतू बातें मत किया कर। अबकी हमारी बोर्ड की क्लास है। आठवी में ज़्यादा पढना पड़ेगा हमें।''

''सागर, तू किताबी-कीड़ा मत बना रह कर यार। मैं तेरे काम की बात ही तो कर रहा था।''

''तू नहीं सुधरेगा पाली। चल बोल क्या कह रहा था।''

''देख सागर, विपुल का नया बस्ता है और चकाचक वर्दी है। जूते भी नए और

किताबें भी। हमारी तो केवल क्लास नई है। हमारे पुराने थैले में पुरानी किताबें हैं।''

''हाँ यार। जीवन भाई की किताबें हैं मेरे बस्ते में। सब किस्मत की बात है भाई। वह बड़े घर का बालक है।''

''हम भी तो बड़े घर के बालक थे सागर। याद कर वो दिन जब हम शहर में सरकस देखने जाया करते थे, जब हम मनचाहा खाना...।''

बींच में ही सागर बोल पड़ा, ''छोड़ ना पाली भाई। पिताजी कहते हैं कि आगे की सोचो।''

''मैं आगे की ही सोच रहा हूँ सागर। क्यों ना हम विपुल का बस्ता गायब कर दें?''

''ग़ायब कर दें? पर क्यों और कैसे पाली?''

''तू पहले नम्बर पर आ जाएगा। इसके बस्ते को ग़ायब करने में मदद करनी पड़ेगी तुझे।''

''तू पागल है क्या? ये नया बस्ता मँगवा लेगा!''

''हम उसे भी गायब कर देंगे।''

पाली की यह बात सागर की समझ में आ गई।

उसने खुश होकर कहा, ''वाह पाली भाई! क्या दिमाग़ लगाया है तूने। ऐसे तो वह पढ़ ही नहीं पाएगा पूरे साल।''

मौका लगाकर सागर और पाली ने विपुल के बस्ते को किताबों सहित पास वाले तालाब में डूबो दिया।

अपना बस्ता चोरी हो जाने के कारण विपुल रोने लगा। अध्यापकों ने उसके बस्ते के बारे में सभी बच्चों से पूछा, लेकिन कोई सुराग नहीं लगा। अन्ततः यह मान लिया गया कि कोई छोटा बच्चा उसे उठा ले गया।

छोटी कक्षाओं के बच्चों को टाफी का लालच देकर पूछताछ की गई पर किसी को कुछ पता नहीं था।

जगत सिंह अपने बेटे का दूसरा बस्ता व किताबें ले आया। नए बस्ते को देख पाली ने सागर से कहा, ''नया शिक़ार आ गया सागर। देखते हैं कि ये कब तक नया बस्ता लाता है। इसे हम पढ़ने नहीं देंगे। ये बस्ते की चिंता में पड़ा रहेगा और हम पढ़ते रहेंगे। अबकी बार तेरा पहला नम्बर पक्का है।''

इधर विपुल अपने बस्ते की कड़ी निगरानी कर रहा था। वह पानी आदि के लिए जाता तो दूसरे बच्चों को इसकी देखभल का जिम्मा सौंप देता। सागर व पाली से भी उसने अपने बस्ते की सुरक्षा करने को कह रखा था।

विपुल की सख़्त निगरानी के बावजूद वे दोनों उसका बस्ता चुराने में सफल हो गए। उन्होंने इसे भी तालाब के हवाले कर दिया। उन पर किसी को जरा भी शक़ नहीं हुआ।

अपने बेटे का बस्ता दूसरी बार चोरी होने पर जगत सिह विद्यालय जा पहुँचा। सभी अध्यापक भी हैरान परेशान थे कि कोई विपुल का ही बस्ता चोरी क्यों कर रहा है।

मुख्याध्यापक ने इस घटना पे चिंता व्यक्त करने के बाद कहा, ''जगत सिंह जी,

बच्चे का बस्ता मैं लाकर दे दूँगा। हम शर्मिन्दा हैं कि ऐसा कैसे हो गया।''

उसकी बात सुनकर जगत सिंह ने नम्र अंदाज़ में कहा, ''बात बस्ता लाने की नहीं है मास्टर जी। बात ये है कि विपुल का ही बस्ता चोरी क्यों हो रहा है? मैं बस्ता ला दूँगा, कल फिर चोरी हो जाएगा।''

''हम और ज़्यादा पूछताछ करेंगे। हो सकता है कि चोर पकड़ में आ ही जाए।''

इस घटना के लिए जिम्मेदार बच्चे को पकड़ने के लिए सभी अध्यापकों ने अपनी तरफ से एक अभियान-सा छेड़ दिया। मुख्य शिक्षक ने प्रार्थना-सभा में चोरी के परिणामों पर एक लम्बा भाषण दिया। चोर का दिल पिंघलाने के लिए ईमानदारी की घुट्टी पिलाने की कोशिश की गई। बस्ते को लौटाने वाले बच्चे को माफ़ी के साथ सौ रुपये का नकद पुरस्कार देने की बात कही गई लेकिन कोई परिणाम नहीं निकला।

एक बार फिर विपुल का नया बस्ता आ गया। जगत सिंह ने अपने बेटे को अधिक सावधानी के साथ बस्ते की निगरानी करने को कह दिया। विपुल अब आधी छुटटी में भी बस्ते के पास बैठा रहता। वह पढ़ने में लगा रहता। इससे सागर की चिंता बढ़ गई।

एक दिन उसने पाली से कहा, ''ऐसे तो विपुल पहले नम्बर पर आ जाएगा! ये तो आधी छुटटी में भी पढ़ने लगा यार!''

यह सुनकर पाली ने कहा, ''तो ऐसा करते हैं हम इसे ही तालाब में फेंक देते हैं।''

''पागल हो गया है क्या तू? इसे तैरना आता है।''

यह सुनते ही पाली हँसने लगा। सागर ने उसकी तरफ प्रश्नवाचक नज़रों से देखा,वह हँसते हुए ही बोला, ''उसे तैरना आता तो क्या हम उसे फेंक देते पगले!''

''तू ही तो कह रहा था फेंकने की ?''

''मैं तो मज़ाक कर रहा था।''

''मज़ाक बाद में करना। ये सोच कि इसका बस्ता कैसे चुराया जाए।''

थोड़ा सब्र कर सागर। जल्दबाजी की तो पकड़े जाएंगे हम दोंनो। देख नहीं रहा है क्या, अध्यापकों का भी सख़्त पहरा है अबकी बार।''

विद्यालय में एक दिन जादू का खेल दिखाने वाला आ गया। सभी बच्चों को खेल के मैदान में पेड़ की छाया में बैठा दिया गया। विपुल अपनी कक्षा में बैठा यही सोच रहा था कि मैं वहाँ बस्ते को साथ ले जाऊँ या नहीं। तभी सुलेखा वहाँ आ पहुँची।

सुलेखा ने कहा, ''आज चोर को पकड़ा जा सकता है।''

विपुल ने पूछा, ''कैसे सुलेखा?''

''तुम जादू का खेल देखने चले जाओ। मैं लकड़ी के इस बोर्ड के पीछे छुपकर बैठ जाऊँगी।''

''ये तो मैं भी कर सकता हूँ सुलेखा।''

''तुम वहाँ दिखोगे तभी तो चोर आएगा!''

यह सुनकर विपुल ने प्यार भरी नज़रों से सुलेखा को देखा और कहा, ''तुम्हें खेल नहीं देखना!''

''मुझे आज चोर का खेल ख़त्म करना है विपुल।''

यह सुनकर विपुल ने धन्यवाद के तौर पर कहा, ''वाह सुलेखा! तुम तो अपने पापा की तरह मजबूत इरादे रखती हो।'' यह कहकर वह कक्षा-कक्ष से बाहर चला गया।

विपुल को बैठे देख सागर व पाली की आँखों मे नई चमक आ गई। उन्होंने आँखों ही आँखों में वहाँ से उठकर जाने का इरादा कर लिया। वे चुपके से वहाँ से उठे और कक्षा-कक्षों की ओर आ गए। अभी खेल शुरू नहीं हुआ था, इसलिए सभी बच्चे आपस में बात कर रहे थे और किसी का भी ध्यान उन दोनों के प्रस्थान पे नहीं गया।

सागर और पाली को आते देख सुलेखा श्यामपट की ओट में बैठ गई। वह सोचने लगी- सागर तो ऐसा काम नहीं कर सकता! ये ज़रूर किसी अन्य काम से आया होगा। हो सकता है जादूगर ने कुछ मंगवा लिया हो ...

उसकी सोचने की श्रृंखला टूट गई क्योंकि अब तक वे अंदर आ चुके थे। उन्होंने चुपके से विपुल का बस्ता उठाया। सुलेखा को कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। तभी पाली की आवाज़ उभरी, ''ये बस्ता भी गया पानी में बेचारे विपुल का।'' यह सुनते ही सुलेखा हैरान रह गई। वह डर भी गई थी। जैसे ही वे बाहर निकले, वह दूसरे दरवाजे से भाग खड़ी हुई। उन दोनों ने उसे पहचान लिया। सागर सारा मामला समझ गया। उसने पाली से कहा, '' फटाफट बस्ता अंदर रख आ और भाग ले।''

पाली ने तुरंत इस आदेश का पालन किया और वे मैदान की तरफ दौड़े लेकिन आगे से सुलेखा के साथ मुख्य शिक्षक आ गए। उन दोंनो ने बिना पूछे ही सफाई देनी शुरू कर दी। सागर बोला, ''मास्टर जी यह सुलेखा हमारे कमरे में छुपी बैठी थी।''

उनका कान पकड़कर मुख्य शिक्षक बोला, ''और तुम दोनों विपुल के बस्ते को चुराने के लिए कमरे में घुसे थे।''

पाली ने रोते हुए सफाई दी, ''हम तो रखवाली कर रहे थे जी। विपुल ने हमारी भी डयूटी लगा रखी है बस्ते को संभालने की।''

''तुम ऐसे नहीं मानोगे। या तो सच-सच बता दो या जादूगर से जादू करवाना पड़ेगा हमें तुम पर।''

मुख्य शिक्षक की यह धमकी बेअसर साबित हुई। वे दोनों सुलेखा को ही चोर बताने लगे।

मुख्य शिक्षक ने जादूगर को सारा मामला समझाने के बाद सागर व पाली को एक कमरे में उसके साथ बंद कर दिया। जादूगर ने उन दोनों पर थोड़ा-सा जल छिड़का और अपनी छड़ी उन पर घुमा दी। फिर उसने सर्वज्ञानी का नाटक करते हुए.कहा, ''देख रहा हूँ मै सब, तुम पर जो अभी-अभी छिड़का गया है, वह मुझे सब कुछ दिखा रहा है।'' उसका यह सामान्य-सा वाक्य था लेकिन उनको लगा कि उसने पानी छिड़का था और इसे तालाब दिखाई दे रहा है। चोर की दाढ़ी में तिनका वाली कहावत चरितार्थ हो गई। उनको सहमे हुए देखकर जादूगर ने फिर से कहा, ''तुम कहो तो अपने नाख़ून में तुम्हारी करतूत को ज्यों का त्यों दिखा सकता हूँ।''

यह सुनते ही वे दोनों घबरा गए। पाली ने सारा सच उगल दिया।

बस्ता चोरों को कोई शारीरक सज़ा नहीं दी गई। उन्हें अपने अभिभावकों को विद्यालय में बुला लाने को कह दिया गया। जादूगर को धन्यवाद के तौर पर मुख्य शिक्षक ने अपनी ओर से पाँच सौ रुपये दिए।

दौलत राम और पाली की माँ अगली सुबह विद्यालय में आ गए। उन दोनों को दूसरे बच्चों ने पाली व सागर की करतूत के बारे में बता दिया था। सारे गाँव में पाली व सागर के चर्चे चल रहे थे।

जगत सिंह स्कूल में नहीं आ सका क्योकि वह किसी काम से बाहर गया हुआ था।

दौलत राम ने दोनों बच्चों की तरफ से माफी माँगते हुए मुख्य शिक्षक से हाथ जोड़कर कहा- बच्चे हैं मास्टर जी, माफ कर दीजिए। आगे से ऐसी ग़लती नहीं होगी।

मुख्य शिक्षक ने उन दोनों से कहा,''ये बच्चे होते तो बार-बार ऐसा नहीं करते। बच्चे का दिमाग़ तो कोरी स्लेट की तरह होता है लेकिन बार-बार ईमानदारी की अपील करने के बावजूद ये दोनों टस से मस नहीं हुए। बच्चा ग़लती करता है मगर समझाने पर समझ भी जाता है। मैं अपनी बताता हूँ। बचपन में एक बार सहपाठी की कलम चुरा ली। कलम बहुत सुंदर थी और मेरे मन में बस गई थी। कलम चोर को पकड़ने के लिए हमारे मास्टर जी ने ईमानदारी की कहानी सुनाई। मैं उस कहानी को सुनकर रो पड़ा। मुझे खुद से ही ग्लानि हो गई और रोते हुए वह कलम मास्टर जी को दे दी। ये होते हैं बच्चे लेकिन इन पर तो असर ही नहीं हुआ। तीसरी बार चुराने लगे विपुल के बस्ते को। हम इन्हें अपने विद्यालय में नहीं रख सकते दौलत जी।''

सागर व पाली को विद्यालय से निकाल दिया गया। उन दोनों को उन्हीं के गाँव में दाख़िला दिलवा दिया गया। इस घटना से आहत सागर ने पाली से कहा, '' याद रखना दोस्त। नीलकंठ की बेटी सुलेखा भी हमारी दुश्मन बन गई है अब। जगत सिंह तो पहले से ही था हमारा शत्रु।''

उसकी यह बात सुनकर पाली ने कहा, ''हममें कुछ खास तो है सागर, इतनी-सी उम्र में हमारे दो-दो दुश्मन हैं।''

''अब हमें पढ़-लिख कर दिखाना है सबको। हमारा दुश्मन पैसे वाला है, हमें भी उसके मुकाबले का बनना है।''

गणतंत्र दिवस पर सुलेखा को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर जगत सिंह ने कहा, ''मैं सुलेखा का आभारी हूँ कि उसने अपनी कुशलता का परिचय देते हुए विपुल का बस्ता चुराने वालों को पकड़वाया। ऐसी बिटिया को मैं नमन करता हूँ।''

इस अवसर पर नीलकंठ व उसकी पत्नी शीलवती भी पधारे हुए थे। इस मौक़े पर मुख्य अतिथि के तौर पर रक्तदान अभियान ''खून का एक रंग'' के संस्थापक आमंत्रित थे।

उन्होंने मंच से बोलते हुए कहा, ''यह विद्यालय बेहतरीन कार्य कर रहा है और मैं स्कूल मुखिया से इसमें एक अति विशिष्ट मुहिम चलाने की विनती करना चाहूँगा। हमारे

देश के युवाओं को अपने रक्त-समूह की जानकारी नहीं होती और न ही इसे जानने की उत्सुकता दिखाते हैं जबकि यह बहुत ज़रुरी है। कभी किसी परिजन या किसी ज़रुरतमंद को आपके रक्त की ज़रुरत पड़ सकती है। यदि आपको अपने ब्लड-ग्रुप का पता है तो बिना देरी किये आप उसकी जान बचा सकते हैं। मैं चाहता हूँ कि प्रत्येक बच्चें के रक्त की जाँच करके उसके ब्लड-ग्रुप का एक प्रमाण पत्र दिया जाए और यह काम हमारी संस्था निशुल्क करने को तैयार है।''

उसकी इस सलाह पर मुख्याध्यापक ने माइक संभालते हुए कहा, ''हमें आपकी सलाह काम की लगी जी। हम छठी कक्षा से लेकर बारहवीं कक्षा तक के बच्चों का रक्त-समूह इसी साल चैक करवा लेंगे, मतलब इसका प्रमाण-पत्र तैयार करवा लेंगे।''

मुख्याध्यापक की यह बात सुनकर मुख्यअतिथि ने कहा, ''आप पाँचवीं से करवा लें तो बेहतर रहेगा गुरु जी। कई बच्चे पाँचवी पास या फेल होकर पढ़ाई भी तो छोड़ देते हैं।''

''चलो ठीक है जी। हम पाँचवीं से शुरू कर लेते हैं।''

निश्चित तारीख को चिकित्सकों की टीम विद्यालय में आ पहुँची। टीम में तीन चिकित्सक व एक नर्स थी। सभी बच्चों को स्कूल प्रांगण में बैठा दिया गया। सुई से तो सभी बच्चे डर रहे थे लेकिन हिमांक की हालत दयनीय थी। उसका दिल घबरा रहा था। अप्सरा व जीवन सिंह उसे अपने भय पर काबू करने की हिम्मत बंधा रहे थे।

सभी बच्चों के रक्त का नमूना उनके नाम सहित ले लिया गया। बस हिमांक बाकी था। वह सबसे पीछे जाकर बैठ गया था। चिकित्सकों ने उसका दिल बहलाने के लिए उससे बातें करनी शुरू कीं और नर्स ने ओंधे मुंह उसे अपनी गोद में लिटा लिया।

अचानक वह चुप हो गया। चिकित्सकों को लगा कि उसने रोना बंद कर दिया है और उन्होंने झट से उसकी बाजू से रक्त निकाल लिया। लेकिन यह क्या? हिमांक तो बेहोश हो चुका था। उसे फटाफट पास के सिविल अस्पताल में ले जाया गया। कुछ देर बाद उसे होश आ गया। चिकित्सक ने कहा, ''हिमांक को ट्राईपानोफोबिया है।''

यह सुनकर दौलत राम सहम गया। उसने पूछा, ''यह कौन-सी बीमारी है डाक्टर साहब?''

संपूर्ण पुस्तक पढ़ने के लिए अपनी प्रति आज ही खरीदें।